सेन्ट्रल जोन इंश्योरेन्स एम्पलाईज एसोसियेशन

(ए.आई.आई.ई.ए. से सम्बद्ध)

प्रभांजलि, 33, आर.डी.ए. कालोनी, टिकरापारा, रायपुर (छ.ग.)

अध्यक्ष : का. एन. चक्रवर्ती

महासचिव : का. डी.आर. महापात्र

परिपत्र क्र. : 01/2017

दिनांक : 01.01.2017

मध्य क्षेत्र के समस्त बीमा कर्मियों के नाम

प्रिय साथियों,

विषय : अभिनंदन वर्ष 2017

नव वर्ष 2017 का स्वागत करते हुए, हम मध्यक्षेत्र के समस्त बीमा कर्मियों के साथ-साथ देश व दुनिया के तमाम मेहनतकश अवाम को तहेदिल से क्रांतिकारी अभिनंदन एवं शुभकामनाएं प्रेषित करते हैं।

समय अपनी गति से आगे बढ़ता है। दिन सप्ताह में, सप्ताह माह में और माह वर्ष में तब्दील होता है, और इसी तरह से वर्ष 2016 की विदाई घड़ी आ गई है और वर्ष 2017 का पदार्पण हो गया। लेकिन इन 365 दिनों का जब हम अवलोकन करते है, विश्लेषण और आत्मविश्लेषण करते हैं तो हम महसूस करते हैं कि पूरे वर्ष भर जो संघर्ष, कठिनाई, अड़चनें, अवरोध, गतिरोध मेहनतकश वर्ग के साथ-साथ आम जनता के सामने आई उससे हम किस तरह से उबरे और कहां तक सफल हुए। निश्चय ही इन मसलों का विश्लेषण करना जरूरी होगा।

दुनिया के पैमाने पर अगर गौर करते हैं तो पाते हैं कि वैश्विक आर्थिक मंदी अब भी बदस्तुर जारी है और हाल फिलहाल इससे उबरने का कोई भी रास्ता नजर नहीं आ रहा है, उस पर विडम्बना यह है कि मंदी के नाम पर कुर्बानी केवल और केवल आम जनता को, देने के लिये मजबूर किया जा रहा है। नवउदारवादी आर्थिक नीति, जो मंदी का जनक है, की वजह से न केवल आर्थिक असमानताएं बढ़ी है बल्कि गरीबी और बेरोजगारी की समस्या दिन दूनी रात चौगुनी होती जा रही है। आर्थिक असमानता के संबंध में एक रिपोर्ट के अनुसार दुनिया की करीब आधी सम्पदा एक प्रतिशत आबादी के कब्जे में है।

इस आर्थिक मंदी से उबरने के लिये सत्ता पक्ष सामाजिक खर्चों में कटौतियों को इसका उपचार मानते हैं जो किसी भी हालत में सही नहीं है। इसका विरोध जारी है और नये वर्ष में इसे और तीव्र से तीव्रतम करने की आवश्यकता है।

जहां तक देश की हालत पर गौर करें तो, इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि, आर्थिक दृष्टि से हमें, नवउदारवादी नीति के कारण, उन्हीं समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है जो दुनिया के अन्य देश झेल रहे हैं। इसके अलावा देश में जो राजनैतिक परिस्थिति चल रही है कहना मुश्किल है कि, हम कहां जा रहे हैं। खासतौर से जब से भाजपानीत एन.डी.ए. की सरकार सत्ता में आई है आम जनता, चाहे वो मजदूर हो, किसान हो,, छात्र हो, नौजवान हो, महिला हो, कोई भी वर्ग खुश नहीं है, हर तरफ असंतोष पनप रहा है। अभी हाल ही में नोटबंदी का तुगलकी फैसला इसका ताजातरीन उदाहरण है। इस देश में अब खाने-पीने से लेकर, पहनने बोलने तक में, एक लक्ष्मण-रेखा खींची जा रही है। सरकार की नीतियों के खिलाफ बोलना देशद्रोही की परिभाषा में शुमार हो गया है। साम्प्रदायिक माहौल बिगाड़ने की कोशिश जारी है। जिसके खिलाफ भी सतर्क एवं सचेतन संघर्ष की आवश्यकता है।

बीते वर्ष में अगर हम अपने उद्योग की बात करें तो हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि तमाम विपरीत परिस्थिति के बावजूद आज भी राष्ट्रीयकृत भारतीय जीवन बीमा निगम का कोई विकल्प नहीं है। सरकार की तरफ से इस उद्योग की हिफाजत के लिये कुछ भी प्रयास नहीं हो रहा है उल्टे इसे येन-केन-प्रकारेण निजी देशी विदेशी पूंजी के हवाले करने की ही कोशिश हो रही है, बावजूद इसके कि, राष्ट्रीयकृत बीमा उद्योग की आर्थिक क्षमता के कारण सरकारी योजनाओं में देश के विकास के लिये करोड़ों-अरबों की

राशि मुहैया प्रतिवर्ष करायी जाती है। इस वर्ष एलआईसी ने अपना हीरक जयंती भी मनाया है। एलआईसी की इस प्रगति यात्रा के समक्ष एफडीआई की सीमा में वृद्धि के बाद व घटते घरेलू बचत की चुनौती का मुकाबला करते हुये हमें एलआईसी की निरन्तर अग्रगति के लिये सर्वोत्तम योगदान सुनिश्चित करना होगा। साथ ही इन तथ्यों को हमें देश की जनता के मध्य व्यापक जनअभियानों के जरिये पहुंचाना होगा ताकि, सार्वजनिक क्षेत्र की एलआईसी व आम बीमा कंपनियों के प्रति बीमाधारकों व आम जनों का जो प्रगाढ़ विश्वास हमने अर्जित किया है उसे और सुदृढ़ बनाया जा सके। हमें आम बीमा क्षेत्र में विनिवेश की मुहिम के विरूद्ध भी जनमत निर्माण में जुटना होगा।

बीता वर्ष इन विपरीत व कठिन राजनैतिक दौर में भी ए.आई.आई.ई.ए. के अद्‌भुत कौशल व बीमा कर्मचारियों-अधिकारियों के संयुक्त एकताबद्ध संघर्ष के बदौलत ऐतिहासिक वेतन पुनर्निर्धारण हासिल करने का भी वर्ष रहा है। बीमा कर्मियों के संघर्ष की अनगिनत उपलब्धियों में एक और उपलब्धि की कड़ी जुड़ने का यह साल साक्षी रहा, जिसका हमें गर्व है, यही नहीं इसके अतिरिक्त भी हमने अनेक सुविधाओं में सुधार हासिल किये। अब जरूरत है इन उपलब्धियों को बचाये रखने सतत् जागरूकता व सांगठनिक सुदृढ़ता की।

जब देश में जनवाद खतरे में हैं, ट्रेड यूनियन अधिकार छीनने की कोशिशें तेज हो रही है और मजदूर वर्ग की एकता को तोड़ने घृणित साम्प्रदायिक विभाजन व दलितों पर हिंसा की मुहिम जारी है तब धर्म, जाति, भाषा से परे मेहनतकशों की चट्‌टानी वर्गीय एकता के जरिये ही, हम न केवल स्वयं को सुरक्षित रख सकते हैं वरन् हमारे लंबित मांगों को भी प्राप्त कर टीएमपी सहित अन्य आक्रमणों का सामना कर सकते हैं।

इसलिये नये वर्ष में संगठन को हमें और मजबूत करने का संकल्प लेना होगा। हमें गर्व है कि यह वर्ष सी.जेड.आई.ई.ए. का भी रजत जयंती वर्ष है। इस रजत जयंती के पूरे वर्ष के दौरान सांगठनिक एकता, प्रतिबद्धता, जागरूकता के लिये कार्यक्रम हमें अपने हाथ में लेना होगा क्योंकि किसी भी संगठन को अगर मजबूत बनाना है तो उसे सतत् क्रियाशील होना पड़ेगा। संघर्ष के पथ पर समग्र एकता की आवश्यकता होती है। उसी तरह उद्योग की हिफाजत के लिये भी हमें बीमा उद्योग के समस्त वर्ग को संगठित कर नई ताकत और ऊर्जा के साथ चुनौतियों को परास्त करने का संकल्प लेना होगा। नववर्ष 2017 के लिये पुनः असंख्य शुभकामनाएं एवं अभिनंदन।

क्रांतिकारी अभिवादन के साथ,

आपका साथी

(डी.आर. महापात्र)
महासचिव

दुनिया के मजदूरों एक हो

मुद्रक : एक्सेल ऑफसेट प्रिन्टर्स, फूल चौक, रायपुर (छ.ग.) दूरभाष : 0771-4053295